प्रो० नाइट (Knight) ने सामान्य एवं असामान्य लाभ में एक-दूसरे प्रकार से भी विभेद किया है। इनके अनुसार जोखिम दो प्रकार का होता है (1) ज्ञात एवं अज्ञात।
ज्ञात – जोखिम वह है जिसका पहले से ही अनुमान लगाया जा सकता है इसी के विपरीत,
(2) अज्ञात – जोखिम के संबंध में पहले से कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता।
प्रो० नाइट के अनुसार सामान्य लाभ ज्ञात जोखिम तथा असामान्य लाभ अज्ञात जोखिम का परिणाम है।

विक्री पर लाभ की गणना तथा वार्षिक लाभ की गणना। (Profit Per Annum and Profit Per Turn over)

साधारणतया लाभ की गणना वार्षिक आधार पर की जाती है इसे वर्ष भर में प्राप्त लाभ की कुल पूँजी के प्रतिशत के रूप में दिखलाया जाता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यापारी में 10 हजार रुपये का पूँजी लगाता है जिससे एक वर्ष में एक हजार रु० लाभ प्राप्त होता है तो कहा जाएगा कि उसकी पूँजी पर 10% लाभ प्राप्त हुआ। इस विधि को वार्षिक लाभ की गणना की विधि कहा जाता है।

परन्तु एक वर्ष में कुल ~~जोखिम~~ विक्री केवल पूँजी की मात्रा के बराबर ही नहीं होती वरन व्यवहारिक रूप में विक्री इससे कई गुणा अधिक होती है। अतः बहुत से व्यापारी अपने विक्री के आधार पर निकालते है जैसे उपरोक्त 10 हजार रुपये की पूँजी की बिक्री एक बार में हुई और लाभ 100 रु० हुआ तो कहा जायेगा कि एक बिक्री पर लाभ एक प्रतिशत हुआ इसप्रकार अगर उपरोक्त पूँजी यदि ~~एक~~ वर्ष में 10 बार बिक्री होती